International Journal of History 2020; 2(2): 142-145

E-ISSN: 2706-9117
P-ISSN: 2706-9109
IJH 2020; 2(2): 142-145
Received: 19-06-2020
Accepted: 22-07-2020

डॉ. राकेश कुमार झा
S/o उपेन्द्र झा, पकटोला, राढ़ी, जाले, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ. राकेश कुमार झा
S/o उपेन्द्र झा, पकटोला, राढ़ी, जाले, दरभंगा, बिहार, भारत

अध्यात्म, राष्ट्र निमार्ण और तिलक

डॉ. राकेश कुमार झा

सारांश
भारतीय राष्ट्रीय विमोचन संग्राम के महान् सेनानी, लब्धामर–कीर्ति राष्ट्रपुरूष, वेदाचार्य, गीताभाष्यकार, प्रौढ़ साहित्य सृष्टा, वेदान्त–तत्त्वज्ञ, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का स्थान भारत के सार्वजनिक जीवन में अत्यन्त उच्च महिमामंडित और प्रसिद्ध है। उनकी बुद्धि प्रखर थी और आंग्ल–भारतीय नौकरशाही के कार्यो, दुर्राभसंधियों, दैधीभावों और कुटिलपूर्ण कुचर्कों को वे अच्छी तरह समझते थे। वे सरकार की जनता–हित–मर्दक योजनाओं और षड्यंत्रों को जानते थे और बिना हिचक उनका पदाफर्श करते थे। उनकी उच्च बौद्धिक शक्तियाँ आश्चर्यजनक जान पड़ती है। उनको ऋग्वेद, शांङ्कर–रामानुजीय वेदान्त, महाभारत, गीता, कांट, ग्रीन और स्पेन्सर का शास्त्रीय ज्ञान था। भारतीय इतिहास और भारतीय अर्थशास्त्र का भी उन्हें गहरा ज्ञान था।
परंतु उनकी महान बौद्धिक रचनाओं के बावजूद जीवन मेंद्य उनका सबसे बड़ा ऐश्वर्य था–उनका दृढ़ नैतिक चरित्र जो आध्यात्म से लैस था और राष्ट्र निमार्ण के लिए इसी को लोकमान्य तिलक ने हथियार बनाया।

प्रस्तावना
लोकमान्य तिलक महान् राजनीतिज्ञ थे और अपने देष के राजनीतिक अधिकारों की प्राप्ति के लिए प्रयासों के कारण उन्हें अपने वैयक्तित्व जीवन के लिए कुछ समय नहीं मिलता था। सर्वव्यापक, प्रदीप्त, पवित्र और उदात्त देशप्रेम उनके जीवन का प्रमुख विषय था। उनके जीवन का महान् उद्देश्य भारतीयों में देशभक्तिपूर्ण आत्मचेतना को जगाना था। परंतु वे आक्रामक राष्ट्रीयतावाद के केवल अग्रदूत ही नहीं थे, वे देशद्वार यज्ञ में पवित्र प्रस्कल कर्तव्याहुति डालने वाले एक शक्तिशाली नेता थे जिन्होंने अपने विचारो को कार्य रूप में परिणत करने के लिए अदम्य धैर्य के साथ महान् प्रयास किया। इसलिए तिलक केवल राजनीतिक बुद्धिजीवी नहीं रहे अपितु वे उच्च कोटि के व्यवहारिक राजनीतिज्ञ थे। राजनीतिज्ञ के रूप में वे व्यवहारिक, दूरष्टिसंपन्न और चतुर थे, इसलिए नेता के रूप में लाखो के द्वारा उनकी प्रशंसा और पूजा की जाती थी और असंख्य लोग उनका अनुसरण करते थे। उनमें राजनीतिक वास्तविकता की प्रखर भावना थी। उन्होंने दल के सभी सदस्यों के द्वारा दल के बहुमत निर्णयों के दृढ़तापूर्वक पालन का अनिवार्य नियम बना दिया था। वे बहुत बड़े ऐक्यशक्तिस्रष्टा प्रजातन्त्रवादी थे।
वक्ता और लेखक के रूप में तिलक की सफलता प्रखर, आवेशात्मक, विमोहक शब्दावली से युक्त अनुरोधों और अतिरंजित भाषा के आकर्षणों पर नहीं, अपितु वह भाषा के प्रत्यक्ष, स्पष्ट, यर्थाथ तथा तर्कसंगत व्यवहार पर निर्भर करती थी। उनकी राजनीतिक दृष्टि की स्वच्छता और समझौता नहीं करने वाले उनके उस अध्यवसाय ने, जिससे वे उसकी प्राप्ति के लिए काम करते थे, उन्हें आंग्ल–भारतीय नौकड़शाही के लिए सबसे बड़ा आतंक बना दिया था। नेता के रूप में उनमें जादू के समान आकर्षण था। मातृभूमि के लिए वर्षों के निरन्तर और केन्द्रीभूत प्रयासों और घोर कष्टो ने उनके अरिन्दम व्यक्तित्व को एक गंभीरता और विशालता प्रदान की थी।
भारतीय युवकों के मानस में उनके लिए पर्याप्त श्रद्धा और भक्ति की भावना थी। व्यापक और गंभीर विद्वता ने तिलक के व्यक्तिगत आकर्षण को बढ़ा दिया था। तिलक के कुछ आलोचकों ने उन्हें जनभावोत्तेजक वाग्मी कहा हैं परंतु तिलक भाषा की सन्दिग्धाव–अप्रतीत्वग्राम्यत्व युक्त आवेशपूर्ण और अलंकारिक वाग्मिता से सर्वथा मुक्त थे। उनके भाषण और लेख अत्यन्त वाच्यवैशिष्टययुक्त, श्लेषरहित और तर्कसंगत है, और लेखक के गणितीय प्रशिक्षण को सूचित करते हैं। तिलक में मात्र भावनाओं को व्याजस्तुति, विभावना, अतिशयोक्ति आदि के द्वारा प्रभावित करने की चेष्टा नहीं है, परंतु सदा कठोर तथ्यों का आश्रय लेने की प्रवृत्ति है। जनता के लिए उन्हें सच्चा प्रेम था और इसलिए वे उनके लिए सर्वदा सुगम थे। वे कभी अलंकार, रस, ध्वनि, वक्रोक्ति आदि के प्रयोगकर्ता वाग्मी नहीं थे। परंतु प्रजातन्त्रवादियों के भी प्रजातंत्रवादी थे जो अपनी जनता को अकृतिम प्यार करते थे और उन्हें राजनीतिक स्वतन्त्रता की शिक्षा देते थे। वे सदा अपने अनुयायियों का पक्ष लेने की चेष्टा करते थे। उनकी नैतिक भावना दृढ़ थी और वे अपने उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए संदिग्ध साधनों का सहारा नहीं ले सकते थे। दुर्योधन, मैकियावेली और हाब्स उनके प्रेरणास्त्रोत नहीं थे।

1918 में उन्होंने बम्बई कॉंग्रेस के विशेष अधिवेशन का अध्यक्ष होना अस्वीकार कर दिया। वे पूर्णरूप से निःस्वार्थ थे और उनके व्यक्तित्व में अहंकार का स्पर्श भी नहीं थी। इस प्रकार तिलक का व्यक्तित्व अनेक प्रकार से विलक्षण है और असंख्य पीढ़ियों तक उनकी स्मृति भारत के लोगों को और संपूर्ण संसार के वतन्त्रता प्रेमियों को प्रेरणा देती रहेगी।

तिलक बौद्धिक अतिमानव महान् राजनीतिवेत्ता और नैतिक वीर थे। परंतु उनकों आध्यात्मिक ज्ञान भी था। उनको ईश्वर की दयालुता में पूर्ण विश्वास था। अपनी युवावस्था में कुछ वर्षों तक वे संदेहवादी अथवा अज्ञेयवादी रहे होंगे[1] (यद्यपि यह बहुत संदेहास्पद है), परंतु जीवन के अनुभवों ने उन्हें ईश्वर के आध्यात्मिक प्रशासन का विश्वासी बना दिया था। गीता–रहस्य का अध्येता कदापि तिलक को अज्ञेयवादी नहीं कह सकता। तुकाराम के अभंग जिसको भावविहृल कर सहते हों और मोरोपन्त की तरह संसार की असारता का जिसको भान होता हो, वह कभी सचमुच में अज्ञेयवादी हो या रहा हो, ऐसा मानना संगत नहीं मालूम पड़ता। युवावस्था में हक्सले, मिल और स्पेन्सर का अध्ययन उन्होंने अवश्य किया था, किंतु यावज्जीवन उनकों आश्वासन गीता और दासबोध से ही मिला।

मैं अनेक कारणों से तिलक को महान् आध्यात्मिक पुरूष मानता हूँ। उनके व्यक्तित्व की आंतरिक संरचना ठोस एकाश्मी हैं। आंतरिक विरोधों और मानसिक अशांति के कारण उनके गंभीर पश्चाताप का कोई प्रमाण नहीं मिलता। आवेशात्मक अशांति का भी कोई चिह्न नहीं है। तिलक का व्यक्तित्व उदार और अनुपम शक्तिशाली था, फिर भी उनकी आकृति मृदु और सौम्य थी। उनके व्यक्तित्व में कठोर पुरूषत्व के तत्व थे और महान् आत्मविश्वास था, परंतु आयु की वृद्धि के साथ दिव्य दयालुता में और विश्व में सर्वत्र व्याप्त दैवी विधान में उनका विश्वास बढ़ गया। विपिनचंद्र पाल ने "तिलक की गंभीर और व्यापक आध्यात्मिक अन्तः प्रेरणाओं'' को स्वीकार किया है, और वे कहते है कि उनकों धार्मिक अनुभवों और विश्वासों का बल था। पाल कहते है कि तिलक उस धातु के बने थे, जिससे "साधु ऋषि बनते है।'' जून, 1947 को प्रार्थना सभा के अपने भाषण में महात्मा गाँधी ने कहा था कि उन्होंने तिलक महाराज से अन्तरात्मा की सार्थकता की शिक्षा ली थी।

मैं समझता हूँ कि तिलक का व्यक्तित्व गीता की भाषा में 'स्थितप्रज्ञ' के जैसा था और वे ''त्रिगुणातीत'' होने की आकांक्षा करते थे। 1897 में अपनी गिरफ्तारी के दो घंटे के भीतर ही वे हाजत में गहरी नींद में सोते हुए पाये गये। 1908 में जब उन्हें छः वर्षों का निर्वासन दिया गया था और वे ट्रेन में पूना से साबरमती ले जाये जा रहे थे तो उनकों इतनी अधिक मानसिक शांति थी कि वे गहरी में सो सकें। दारूण त्रासपूर्ण मृत्यु के समय भी वे पूर्ण रूप से निर्भय थे और केवल पूर्ण आध्यात्मिक विश्वास से संपन्न व्यक्ति ही मृत्यु के पूर्व अपने अंतिम चेतन क्षणो में भगवद्गीता के यदा–यदा कि धर्मस्य आदि स्मरणीय श्लोकों का उच्चारण कर सकता था। उन्होंने गीता पर एक महत्वपूर्ण पुस्तक लिखी, परंतु आध्यात्मिक विश्वास से युक्त उनका पवित्र राजर्षेय जीवन उस शाश्वत धर्मग्रन्थ पर उससे बड़ा भाष्य था।

तिलक ने चालीस वर्षों के अपने सार्वजनिक जीवन में अनेक प्रकार के कार्यो में अपनी शक्ति लगाई। शिक्षक के रूप में पूना इंग्लिस स्कूल, दि डेक्कन एजूकेशन सोसाइटी और फर्गुसन कॉलेज की स्थापना के लिए उत्तरदायी सदस्यों में वे प्रमुख थे। स्वदेशी आंदोलन के दिनों में वे समर्थ विद्यालय के प्रमुख संचालक और संरक्षक थे। मानवतावादी के रूप में भयंकर प्लेग की महामारी के समय उन्होंने बड़ी महत्वपूर्ण सेवा की। पूना के मद्य–निषेध संबंधी कार्यकर्ताओं में वे अग्रगण्य थे। उन्होंने गरीब ममलतदारों की उस समय सहायता की जब उनकी सहायता करने वाला कोई नहीं था। आर्थिक अन्याय के विरूद्ध योद्धा के रूप में उन्होंने 1896 के दुर्भिक्ष के समय जनता को अपने अधिकारों की जानकारी दिलाने में महत्वपूर्ण काम किया। उन्होंने स्वदेशी पंथ का दृढ़तापूर्वक प्रचार किया। उन्होंने कॉंग्रेस मंच से आर्थिक विषयों से संबंधित अनेक महत्वपूर्ण प्रस्ताव किये, जैसे स्थायी बंदोबस्त, आर्थिक विकेन्द्रीकरण आदि से संबंधित प्रस्ताव। राजनीतिक नेता के रूप में कॉंग्रेस कार्यो में तिलक का बहुत महत्व था। उन्होंने 'केसरी' और 'मराठा' अपने इन दो समाचार पत्रों और 'शिवाजी' तथा 'गणपति' महोत्सवों के द्वारा जनता में राजनीतिक अधिकारवाद और रागात्मक देश में भक्ति की भावना जगाई। उनके होमरूल–लीग ने देश को स्वराज्य के लिए तैयार किया। भारतीय राष्ट्रीयतावाद और ब्रिटिश लेबर पार्टी के बीच राजनीतिक मित्रतापूर्ण संबंध का निर्माण कराने में उनका अधिक हाथ था। 1920 में उन्होंने कॉंग्रेस प्रजातान्त्रिक दल की स्थापना की। इस प्रकार हम देखते हैं कि तिलक का जीवन विविध प्रकार के गतिशील कार्यो का अभिलेख है। वे एक शक्तिशाली नेता थे और जिस काम में उन्होंने उदात्त और स्थायी प्रभाव छोड़ा। इसलिए वे अपने सहयोगियों से बहुत अधिक प्रसिद्ध हुए।

यद्यपि आधुनिक महाराष्ट्र में देशभक्ति का बीजवपन चिपलूँकर द्वारा किया गया था परंतु तिलक महाराष्ट्र में उग्र और शक्तिशाली राट्रीयतावाद के वास्तविक संस्थापक थे। ''केसरी'' के द्वारा प्रायः चालीस वर्षो तक उन्होंने प्राकृतिक अधिकार, दासत्व से जुगुप्सा, राजनीतिक स्वतन्त्रता और आर्थिक न्याय की भावनाओं का प्रचार किया। उन्होंने महाराष्ट्र के लोगों को संगठित आत्मसहायता की शिक्षा दी। 1897 में अपने जीवन को खतरे में डालकर उन्होंने पूना–निवासियों की सेवा की और

नगर में उनकी उपस्थिति का वहाँ के निवासियों पर जादू के समान प्रभाव पड़ता था। गणपति और शिवाजी महोत्सवों ने मराठा लोगों को देशभक्ति, शक्तिवाद और राजनीतिक आत्मनिर्भरता की स्वतन्त्र क्षमता की नवीन भावना दी। उन्होंने स्वराज्य की अवधारणा को नवीन रूप दिया जो अंशतः शिवाजी के राजतंत्र का सूचक था। तिलक महाराष्ट्र के इतिहास में बहुत बड़ी शक्ति थे। वे स्वराज्य के लिए संघर्ष करने में शक्ति की अभेद्य चट्टान के समान थे। 'केसरी' ने तीन दशकों से अधिक समय तक महाराष्ट्र की राष्ट्रवादी राजनीति को प्रभावित किया और प्रायः उसका संचालन भी किया। महाराष्ट्र के लोगों ने तिलक के संदेश का ठीक–ठीक अर्थ समझा और महाराष्ट्र के लिए तिलक का शब्द सबसे बड़ा कानून था। महाराष्ट्र तिलक को अजेय बीर और भारत में ब्रिटिश शक्ति का अदम्य विरोधी भी समझता था। तिलक महाराष्ट्र के श्रेष्ठ अमर व्यक्तियों में गिने जायेंगे। चितरंजनदास उन्हें शिवाजी के बाद सबसे बड़ा मराठा कहते है, और स्वामी श्रद्धानन्द उन्हे ''शिवाजी का अवतार'' मानते थे।

भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस में प्रारंम्भिक वर्षों में तिलक आंदोलनकारी के रूप में थे। शीघ्र ही वे सप्राण, ऊर्जस्वल, गतिशील शक्तिवाहक बनने लगे। वे चाहते थे कि कॉंग्रेस का मूल जनता में हो। 1905 से वे 'नये दल' के मान्य नेता हो गये और बंगाल में उन्होंने निर्णयात्मक कार्य किया। जिस समय अन्य नेता लोग मुख्यतः ब्रिटिश सहानुभूति और समर्थन की आशा करते थे उस समय उन्होंने अमर्त्य वीरपुत्र की तरह आत्मविश्वास और आत्म–सहायता की शिक्षा दी। तिलक ने कॉंग्रेस में उग्रतावादी, स्वयंप्रभ राष्ट्रीय भावनाओं का प्रवेश कराया। उस समय कॉंग्रेस मुख्यतः मध्यमवर्गीय और अंशतः रईसों की संस्था थी। तिलक ने कॉंग्रेस में निम्न मध्यवर्गो और सामान्य जनता को लाने की चेष्टा की। देश की जनता पर और मुख्यतः महाराष्ट्र की जनता पर उनका व्यक्तिगत प्रभाव अत्यधिक था। 1916 से 1920 तक होमरूल–लीग के प्रचार–कार्य के द्वारा उन्होंने कॉंग्रेस के कार्यों की पूर्ति की। कॉंग्रेस प्रजातांत्रिक दल की स्थापना के द्वारा उन्होंने आशा की थी कि कॉंग्रेस में नियमित निर्वाचन की प्रक्रिया में प्रवेश होगा। 1907 में सूरत कॉंग्रेस में झगड़ा हो गया। परंतु 1918 में तिलक दिल्ली कॉंग्रेस के सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुने गये, परंतु वे

इस पद को स्वीकार नहीं कर सकते थे क्योंकि वे चिरोलवाले मुकदमें में व्यस्त थे और उन्हें इग्लैण्ड जाना था। 1916 के लखनऊ कॉग्रेस से 1919 के अमृतसर कॉग्रेस तक वे कॉग्रेस में सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति थे। सभी लोग उन्हें कलकत्ता विशेष कॉग्रेस के अध्यक्ष के रूप में देखना चाहते थे परंतु मृत्यु ने असमय में ही उन्हें हमसे छीन लिया। निश्चय ही तिलक ने कॉग्रेस को परिवर्तित कर दिया और इसे नौकरशाही–विरोधी दृढ़ संस्था बना दी। जवाहर लाल नेहरू कहते है– ''तिलक नवीन भारत के प्रथम राजनीतिक नेता थे, जो जनता के बीच जाते थे और उनसे बल प्राप्त करते थे। उनके गतिशील व्यक्तित्व ने शक्ति ओर अदम्य साहस का नवीन तत्व दिया और बंगाल में राष्ट्रवाद और त्याग की नयी भावना से मिलकर इसने भारतीय राजनीति के स्वरूप को बदल दिया।[2]

भारतीय राष्ट्र के एक महान निर्माता के रूप में तिलक ने विपुल कीर्तिरश्मि और अमर यश अर्जित किया है। तिलक उच्च कोटि के राजनीतिक नेता थे। वे 1896–97 में स्वराज्य की बात करते थे। उन्होनें 1907 में ही होमरूल का उल्लेख किया था। वे हिंदी को भारत की राष्ट्रभाषा मानते थे। कॉग्रेस प्रजातांत्रिक दल के घोषणा–पत्र में उन्होंने रेलवे के राष्ट्रीयकरण और राजनीति में धर्मनिरपेक्ष अभिविन्यास को स्वीकार किया। भारतीय श्रमिक आंदोलन के राजनीतिक और प्रचारात्मक महत्व को समझने में उन्होंने अनुपम बुद्धिमत्ता और दूरदर्शिता दिखाई। उन्होंने जनता को शक्तिशाली स्वतन्त्रता की भावना की शिक्षा दी। उन्होंने लोगों को अपने बल का अनुभव कराया। वे स्वतन्त्र राजनीतिक जीवन के लिए राष्ट्र की इच्छा के मूर्तिमान रूप थे। उनके बाद स्वराज्य की प्राप्ति केवल समय का प्रश्न रह गयी थी। जब बहुत से लोग मौन थे और कुछ लोग विदेशी शासन के वरदानों की प्रशंसा भी करते थे, उस समय भारत की भाग्य पर दृष्टि रखने वाले वे अकेले देवदूत थे। उन्होंने लोगों को जगाया और उनके सामने रक्षक के रूप में उपस्थित हुए। ''अमृत बाजार पत्रिका'' उनको भारत का सर्वाधिक शक्तिशाली पुत्री मानती थी। वे राष्ट्र के कार्य के लिए गतिशील कार्यकर्ता थे। वे भारत के प्रायः आंगिक भाग के समान बन गये थे। उनकी कठोर उद्देश्य प्रियता और अविचल संकल्प–शक्ति लोगों को जगाने और उनको राष्ट्र के रूप में ढ़ालने में अनवरत लगी थी। इस कार्य में उन्हें जेल की यन्त्रणाएँ सहनी पड़ी। अपने चरित्र बल से वे प्लासी के युद्ध के बाद भारत में ब्रिटिश शासन के सर्वाधिक दृढ़–संकल्प शत्रुओं में से एक जान पड़ते थे। वे केवल आंदोलनकारी नहीं थे, अपितु वे एक बहुत बड़े रचनात्मक राजनीतिज्ञ थे, जिनके जीवन का प्रधान कार्य सबल भारतीय राष्ट्र के आधार का निर्माण करना था। होमरूल के महान सेनानी के रूप में उन्होंने देश को यह मृत्युञ्जय मन्त्र दिया–''स्वराज्य भारतीयों का जन्मसिद्ध अधिकार है।'' भारत की राजनीतिक नेता के प्रबोधन और मुक्ति के लिए तिलक का योगदान अपरिमेय है।[3] विपिनचंद्र पाल कहते है, ''गत चालीस वर्षो के अपने भारतीय सार्वजनिक जीवन में अपने घनिष्ठ परिचितों में मैंने उनके समान किसी को नहीं पाया।[4] एम० ए० अन्सारी कहते है ''तिलक उन विरल व्यक्तियों की श्रेणी में आते है, जो इतिहास में दो या तीन बार जन्म लेते है और वंशावलियों को रौंदते हुए घटना चक्र को परिवर्तित करते हुए जान पड़ते है। वे सामाज्यों को बनाते हैं और अपने गतिमान व्यक्तित्वो से संपूर्ण देश में क्रांति ला देते है।''[5]

तिलक ने अपने प्रचार और कार्यों से देश में गंभीर अशान्ति की भावना उत्पन्न कर दी। वैलेन्टाइन चिरोल उनको ''भारतीय अशांति का जनक'' मानता है। सी०एफ० एन्ड्रूज जनता के लिए तिलक के महान प्रेम का उल्लेख करते है और ''भारतीय राष्ट्रीयतावाद के जनक'' के रूप में उनकी प्रशंसा करते है। निःशेषभारतमहनीय तिलक पर्वत के समान थे जो शक्तिशाली साम्राज्यवादी नौकरशाही के किलों के विरूद्ध युद्ध करते थे। इसलिए ब्रिटिश पार्लियामेंट के भूतपूर्व सदस्य डॉ० बी०एच० रदरफोर्ड कहते है– ''विदेशी शासन से अपने देश को मुक्त कराने वालों के रूप में बाल गंगाधर तिलक कीति के विशाल क्षेत्र में मेजिनी, वाशिंगटन और डेनियल को कॉनेल के साथ ऊँचाई पर खड़े है।''

रेवेरेण्ड जे०टी० संडरलैण्ड भी तिलक को वाशिंगटन और मेजिनी से तुलनीय समझते है। संडरलैंड कहते है कि ''श्री तिलक वाशिंगटन के समान सच्चे देशभक्त थे, निश्चय ही वे दक्षिण अफ्रिका के जेनरल बोथा के समान सच्चे देशभक्त... विश्व में श्री तिलक का क्या स्थान है? क्या यह कहना अतिश्योक्ति है कि उनका स्थान मेजिनी के और अमेरिका स्वतन्त्रता–संग्राम के नेताओं पैट्रिक हेनरी, सेमुअल एडमस् जेफरसना और वाशिंगटन के पार्श्व में है। इनमें से किसी एक आदमी ने, जिनका संसार इतना आदर करता है, अपने देश की प्रगति और स्वतन्त्रता के लिए भारत के इस महान सपूत से अधिक वीरता–पूर्वक या अधिक आत्मत्यागपूर्वक परिश्रम नहीं किया।'' लोकामन्य तिलक और महात्मा गाँधी आधुनिक भारत के दो सर्वश्रेष्ठ लब्धामरकीति राजनीतिक नेता हुए है और जनता ने दोनों का देवतुल्य आदर किया हैं परंतु यदि गाँधी हमें सुकरात, ईसा, फ्रांसिस टाल्सटाय, थोरो, तुलसीदास, रामकृष्ण और भारतीय इतिहास के संतों का स्मरण दिलाते है तो तिलक हमें मूसा, लूथर प्रताप, समर्थ रामदास, शिवाजी, दयानन्द और विवेकानन्द का स्मरण दिलाते है।

मराठी साहित्य के लेखक के रूप में भी तिलक का यश अमर है। उन्होंने ओजस्वी और प्रभावशाली मराठी गध–शैली की रचना की। विनय सकार अपनी पुस्तक ''क्रियटिव इण्डिया'' में साहित्यिक व्यक्ति के रूप में मांटेस्क्, डिडेरों और वोल्टायर से साहित्यस्रष्टा तिलक की तुलना करते है। वे तिलक को 'पूना का गेटे' कहते हैं,[6] जो मराठों के राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के रूप में ''केसरी'' के महान स्रष्टा थे और इस प्रकार महाराष्ट्रदिक्कूलंकशा उनकी धवल कीर्ति थी। तिलक की कुछ अत्यन्त महत्वपूर्ण साहित्यिक रचनाएँ केसरी में प्रकाशित हुई। स्पैन्सर, महाभारत और शिवाजी के जन्म की तिथि के निर्धारण के संबंध में उनके लेख आज भी प्रासंगिक है। वैदिक विद्वता के क्षेत्र में ''ओरायन'' और दि आर्कटिक होम इन द वेदाज्'' उनकी कीति–स्तम्भ–स्वरूप रचनाएँ है।

तिलक के जीवन का संदेश सभी अन्यायपूर्ण शक्तियों के विरूद्ध नैतिक वीरता का मेघघोश है और आने वाले युगों के लिए केवल भारत में नहीं अपितु संपूर्ण संसार में तिलक स्वतन्त्रता, सत्य और न्याय के लिए युद्ध करने वालों अनेकों को प्रेरणा देते रहेंगे। राजनीतिक जीवन में तिलक भारतीय राष्ट्रीयतावाद के उदग्र दुघर्श भीष्म थे, परंतु वे संसार के लिए उन्नयनकारी संदेश देने वाले भी थे। तिलक की कर्मयोग की शिक्षा नयी नहीं है। वैदिक काल और औपनिषद से ही भारत में इसकी शिक्षा दी जाती थी तथा राम, विवस्वान, मनु, पाराशर्यव्यास, जनक और कृष्ण इसके महान शिक्षक रहे है। परंतु दीर्घकाल तक यह विस्मृत था। लोकमान्य ने पूर्वीय और पाश्चात्य आचारशास्त्र और तत्वमीमांसा का समन्वय करके इस शिक्षा को पुनः नये रूप में कहा और नये ढंग से उसकी व्याख्या की। उन्होंने अपनी ''तपस्या'' और ''ज्ञान'' की विश्वसनीय शक्ति के योग से कर्मयोग के दर्शन को नया अर्थ दिया है। कर्मयोग की शिक्षा कर्म और चिन्तन को समन्वित करने की एक सशक्त चेष्टा है। आधुनिक संसार संशयवाद, शून्यवाद, विलगाव, और सत्ता की राजनीति से ग्रस्त है। कर्मयोग आधुनिक बुद्धिजीवियों को एक ओजस्वी और गतिमान संदेश देता है। यह जीवन और उसके कर्तव्यों में गंभीर विश्वास उत्पन्न करता है और वह उसे अर्थपूर्ण बनाता है, जो अन्यथा असम्बद्ध घटनाओं, तथ्यो और प्रक्रियाओं का अव्यवस्थित अंबार होता है। गीता के आधार पर निर्मित कर्मयोग का दैवी संदेश तिलक के जीवन के रहस्य को हमारे मन के सामाने उपस्थित कर देता हैं। वे बहुत बड़े विद्वान थे शायद गत एक हजार वर्षों में सबसे बड़े

विद्वज्जन–पञ्चकों में एक परंतु वे केवल तार्किक नहीं थे। वे एक महान आर्शपरम्परानुसंधायक ऋषि थे। उन्होंने सक्रिय राजनीति को दार्शनिक दृष्टि के साथ मिला दिया था और इसलिए ऐसे महान् "राजर्षि" के रूप में जनता उनकी प्रशंसा करेगी जिन्होंने पुनः एक बार आधुनिक संसार को स्वराज्य और कर्मयोग के दो गंभीर प्रेरणाप्रद और उन्नयनकारी मंत्र दिये है। इन मंत्रों में वीरोचित लोकोपकारी जीवन और समाज तथा राष्ट्र को प्रज्ञापारमिता के उत्कर्ष से आपूर्ण करने वाले जीवन का समन्वय सन्निहित हैं व्यथा, शून्यता, दौर्मनस्य, हिंसा ओर कुवृत्ति से कर्मयोग शास्त्र परित्राण का निर्मल पथ व्यक्त करता है।

निष्कर्ष

राष्ट्रीय आंदोलन में तिलक के योगदान का विस्तृत विवेचन किया जाए तो शायद यही कारण था कि क्रांतिकारी आन्दोलन में भी तिलक की महत्वपूर्ण भूमिका थी। उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन को नई दिशा प्रदान की, जिसे उग्रतावादी आंदोलन के नाम से जाना जाता है। उनका कहना था कि भारत में अशांति नाम की कोई चीज नहीं थी। वह मुख्यतः हिंदू अशांति थी और वह भी महाराष्ट्र, डेक्कन, बंगाल और पंजाब में सीमित थी। उन क्षेत्रों में भी वह अशांति केवल नागरिक केन्द्रों में ही सीमित थी। शायद यही कारण था कि चिरोल तिलक को ब्रिटिश शासन के विरूद्ध द्रोह का खतरनाक नेता समझते थे।

संदर्भ–सूचीः

1. डी. कीर–लोकमान्य तिलक, पृ.–395
2. रामनाथ सुमन–हमारे राष्ट्र निर्माता, पृ.–105
3. मातासेवक पाठक–लोकमान्य तिलक का जीवन, पृ.–83
4. वही, पृ.–85
5. वही, पृ.–90
6. ईश्वरी प्रसाद शर्मा–लोकमान्य तिलक का जीवन, पृ.–101